

वन एवं वन्य जीव



मोहन कहानी की पुस्तक पढ़ रहा था। उसने पढ़ा कि वन में एक शेर रहता था। उस वन में अन्य प्रकार के जीव-जन्तु भी रहा करते थे। मोहन के मन में प्रश्न उठा कि वन किसे कहते हैं? उसने अपने पिता से पूछा कि क्या गमले में लगे पेड़-पौधे वन हैं? पिता जी ने कहा नहीं, तो उसने फिर प्रश्न किया— क्या आस-पास लगे पेड़-पौधे वन हैं? पिता जी ने उत्तर दिया— न तो गमले में लगे पौधे न ही आस-पास लगे पेड़-पौधे वन कहलाते हैं। जहाँ सघन रूप में बड़े क्षेत्र में पेड़-पौधे और अन्य वनस्पतियाँ पायी जाती हैं, उसे वन कहते हैं। वन में विविध प्रकार के जीव-जन्तु भी पाए जाते हैं। वन हमारे लिए एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। वन जीवधारियों के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि हमें शुद्ध वायु एवं जल वनों के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। मानव आदिकाल से ही अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों पर निर्भर था और आज भी निर्भर है। भोजन के लिए फल व सब्जियाँ वनों से ही प्राप्त होते रहे हैं।

- वनों से हमें क्या-क्या प्राप्त होता है? सूची बनाइए।

वनों से कागज, दियासलाई, रेशम, रबर आदि उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा इमारती लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं। भारत में शीशम, साखू, सागौन, आम, नीम, देवदार आदि महत्वपूर्ण इमारती लकड़ियाँ होती हैं। इन लकड़ियों का प्रयोग फर्नीचर जैसे—कुर्सी, मेज, पलंग बनाने में किया जाता है। इसके अतिरिक्त फल, फूल, जड़ी-बूटियाँ, गोंद, रबड़, छाल, लाख आदि प्राप्त होती हैं। लाख से चूड़ियाँ, आभूषण और सजावटी वस्तुएँ तथा रबर से टायर, खिलौने और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनायी जाती हैं। वन तेज वर्षा में मिट्टी के कटाव को रोकते हैं तथा पेड़-पौधे पानी के वेग को कम करते हैं तथा वायु की तीव्र गति को भी कम करते हैं। इससे मिट्टी का कटाव कम होता है। अगर कटाव न रोका गया तो उपजाऊ मिट्टी बह जाएगी, तब पेड़-पौधे, घास और झाड़ियाँ नहीं उग पाएँगी। वन जहाँ आर्थिक रूप से लाभकारी होते हैं, वहीं पारिस्थितिकी सन्तुलन बनाए रखने में भी यह सहायक होते हैं। वनों में बहुत से पक्षी पेड़ों पर घोंसला बनाकर रहते हैं जैसे गौरैया, तोते, चील, कबूतर आदि। अनेक जानवर जैसे शेर, चीता, हाथी, बाघ, तेंदुआ, हिरन, सियार आदि झाड़ियों या गुफाओं में रहते हैं। ये जानवर वन रक्षक माने जाते हैं। इन जानवरों के डर से वन को हानि पहुँचाने वाले लोग वन में नहीं जाते हैं।

दिए गए चित्र को देखकर बताएँ कि वन हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी हैं ?



- अपने परिवेश में पाये जाने वाले वृक्षों एवं उनकी उपयोगिता का चार्ट बनाइए।

वृक्ष का नाम

उपयोग

आम

फल

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

वनों को लोग "प्राकृतिक औषधालय" भी कहते हैं। वनों में बहुत सी जड़ी-बूटियाँ, औषधियों के रूप में मिलती हैं—

	पौधे का नाम	उपयोगी भाग	औषधीय गुण
1.	नीम	पत्ती	रक्त शोधक, त्वचा रोगों के उपचार में
2.	ईसबगोल बीज	भूसी	पेचिश व कब्ज ठीक करने में।
3.	सिनकोना	छाल	मलेरिया की दवा
4.	जामुन	बीजों का चूर्ण	मधुमेह में लाभदायक
5.	यूकेलिप्टस	तेल	जुकाम की औषधि
6.	मुलेठी	जड़	गले की खराश में लाभदायक

पृथ्वी पर निवास करने वाले लाखों जीव-जन्तुओं का आश्रय स्थल या आवास घास व वन होते हैं। जैसे-जैसे मानव ने कृषि कार्य आरम्भ किया तो केवल घास के मैदान ही नष्ट नहीं हुए बल्कि वनों का भी विनाश हुआ और पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जन्तुओं के घर उजड़ गये। इसी प्रकार उद्योगों की स्थापना, रेलवे निर्माण, सड़क निर्माण आदि के परिणामस्वरूप मानव ने अपने लिए अच्छी आवास सुविधाएँ, सुख, वैभव आदि प्राप्त किया लेकिन इसके बदले न जाने कितने जीव-जन्तुओं को अपने आवास से वंचित होना पड़ा।

वन्य जीवों की अधिकाधिक मांग और उनके अवैध शिकार ने भी वन्य जीवों को नष्ट किया। इनमें मुख्य रूप से शेर, हाथी, बाघ, हिरन, घोड़ा, चीता आदि का बड़े पैमाने पर शिकार किया जाने लगा। इस प्रकार वन्य जीवों की अनेक प्रजातियाँ संकटग्रस्त हो गयी हैं। इन्हीं कारणों से वन्य-जीवों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। पशु-पक्षियों की कुछ प्रजातियाँ तो पूरी तरह विलुप्त (खत्म) हो चुकी है जिन्हें विलुप्त प्रजातियों की श्रेणी में रखा जाता है जैसे— डायनासोर, मेमथ। जबकि कुछ प्रजातियाँ खत्म होने की कगार पर हैं जैसे—बाघ, गिद्ध आदि जिन्हें संकटग्रस्त प्रजातियाँ कहते हैं।



वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा कानून बनाए गए हैं एवं संरक्षण हेतु विशिष्ट योजनाएं आरम्भ की गई हैं। इसके अन्तर्गत भारत के विभिन्न स्थानों पर वन्यजीव अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान स्थापित किए गए हैं। भारत के प्रमुख राज्यों के वन्यजीव अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान निम्नलिखित हैं—

वन्यजीव अभ्यारण्य/राष्ट्रीय उद्यान	स्थान
पेरियार अभ्यारण्य	इडुक्की, केरल
चन्द्रप्रभा अभ्यारण्य	चन्दौली, उ०प्र०
मानस अभ्यारण्य	असम
जलदापारा अभ्यारण्य	पश्चिम बंगाल
कान्हा अभ्यारण्य एवं बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान	मध्य प्रदेश
बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान	कर्नाटक
कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखण्ड
दुधवा राष्ट्रीय उद्यान	लखीमपुर—पीलीभीत, उ०प्र०
गिर राष्ट्रीय उद्यान	गुजरात
केवलादेव एवं सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान
नन्दादेवी राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखण्ड
सलीमअली राष्ट्रीय उद्यान	जम्मू कश्मीर
महावीर स्वामी वन्यजीव विहार	ललितपुर, उ०प्र०

भारत में प्राकृतिक तथा वन्य क्षेत्रों को राष्ट्रीय उद्यानों एवं वन्य जीव अभ्यारण्यों के रूप में सुरक्षित रखने के प्रयास किए गए हैं। उद्यान क्षेत्रों में कटाई, चराई तथा आवास को नुकसान पहुँचाने वाली किसी भी गतिविधि की अनुमति नहीं दी जाती जबकि अभ्यारण्य में स्थानीय निवासियों के लिए जंगली उत्पाद एकत्र करने, वृक्षों तथा घास की सीमित कटाई तथा जमीन का निजी स्वरूप बना रहने देने जैसी बातों की छूट रहती है।

वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कार्यक्रम—

- लुप्त प्रजातियों का प्रजनन केन्द्र कुकरैल वन, लखनऊ में 1984-85 में स्थापित हुआ।
- राष्ट्रीय चम्बल वन्यजीव विहार योजना उ०प्र०, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान की संयुक्त योजना है जो मगर व घड़ियाल के संरक्षण हेतु शुरू की गयी है।
- घड़ियाल प्रजनन केन्द्र दो हैं—कुकरैल वन (लखनऊ) तथा कतरनियाघाट वन्यजीव विहार (बहराइच)।
- प्रोजेक्ट एलीफैंट—1992 से भारत सरकार द्वारा कुछ राज्यों में यह प्रोजेक्ट शुरू किया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश राज्य भी शामिल था।

- एलीफैंट रिजर्व-बिजनौर व सहारनपुर जिलों के वन्य क्षेत्र में निर्माणाधीन हैं।
- इटावा के फिशर वन में बब्बर शेर प्रजनन केन्द्र तथा लॉयन सफारी पार्क का निर्माण किया जा रहा है।
- भारत का पहला नाइट सफारी पार्क (रात्रि वन्यजीव पार्क) ग्रेटर नोएडा में निर्माणाधीन है।
- इको डेवलपमेन्ट प्रोग्राम-इसका उद्देश्य संरक्षित वन क्षेत्रों के निकटवर्ती क्षेत्रों में वन उपज का विकास करना है।

सामाजिक वानिकी योजना

- ऑपरेशन ग्रीन योजना-प्रदेश में वृक्षारोपण के प्रोत्साहन एवं संवर्धन के लिए 01 जुलाई, 2001 से यह योजना शुरू की गयी थी। इसका उद्देश्य प्रदेश में हरित क्षेत्र का विस्तार एवं वनों/उद्यानों का उन्नयन करना है।
- वन महोत्सव-1952 से देश के साथ-साथ प्रदेश में भी 01 जुलाई से 07 जुलाई तक मनाया जाता है।
- उ0प्र0 वानिकी परियोजना-विश्व बैंक की सहायता से 19 मार्च 1998 से शुरू की गयी थी।

हमारे जीवन में वनों के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए 21 मार्च को विश्व वन दिवस मनाया जाता है।

धरती को हरा-भरा बनाए रखना पर्यावरण संतुलन के लिए सबसे आवश्यक है। हमें इस दिशा में सार्थक प्रयास करने चाहिए। हमें हरे वृक्षों की कटाई स्वयं नहीं करनी चाहिए तथा जहाँ तक हो सके दूसरों को भी ऐसा करने से रोकना चाहिए। आवश्यक हो तो सम्बन्धित क्षेत्र के वन दरोगा या जिलाधिकारी कार्यालय को सूचित करना चाहिए। हम अपनी आवश्यकता के लिए पेड़ काटते हैं तो हमें अधिक से अधिक पौधे अवश्य लगाने चाहिए। जलाने के लिए लकड़ी का प्रयोग कम से कम करना चाहिए। साथ ही साथ हमें जानवरों के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए, संभव हो सके तो हमें उनकी देखभाल करनी चाहिए। यदि हम इन सब बातों का ध्यान रखते हैं तो हमारा पर्यावरण संतुलित रहेगा तथा हमारा भविष्य सुरक्षित रहेगा।

अभ्यास

प्रश्न-1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

- वनों से प्राप्त होने वाले औषधीय पेड़-पौधों के नाम और उनका उपयोग लिखिए।
- वन क्षेत्र में मिट्टी का कटाव क्यों कम होता है ?
- किन्हीं चार इमारती लकड़ियों के नाम लिखिए ?
- विलुप्त तथा संकटग्रस्त प्रजातियों में उदाहरण सहित अन्तर स्पष्ट कीजिए।



- (ड.) उ०प्र० में स्थित राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभ्यारण्य के नाम लिखिए।
 (च) वनों की संख्या कम होने के क्या कारण हैं ?
 (छ) राष्ट्रीय उद्यान तथा वन्य जीव अभ्यारण्य क्यों बनाए गए हैं ?
 (ज) वन जानवरों को किस प्रकार लाभ पहुँचाते हैं ?

प्रश्न-2 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

- (क) वनों से हमें उद्योगों के लिए प्राप्त होता है।
 (ख) वन जीव-जन्तुओं और पक्षियों के स्थान है।
 (ग) वन को प्राकृतिक कहते हैं।
 (घ) को विश्व वन दिवस मनाया जाता है।
 (ड.) चन्द्रप्रभा अभ्यारण्य में स्थित है।
 (च) कुकरैल वन में स्थित है।

प्रश्न-3 सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (x) का चिह्न लगाइए-

- (क) वन केवल जन्तुओं को लाभ पहुँचाते हैं। ()
 (ख) मनुष्य आदिकाल से ही वनों पर निर्भर था। ()
 (ग) सिनकोना से मलेरिया की दवा प्राप्त होती है। ()
 (घ) गिद्ध एक विलुप्त प्रजाति है। ()
 (ड.) सागौन इमारती लकड़ी है। ()
 (च) पशु-पक्षियों की प्रजातियाँ जो खत्म होने की कगार पर हैं, विलुप्त प्रजातियाँ कहलाती हैं। ()
 (छ) पेड़-पौधे वायु की गति बढ़ाने में सहायक होते हैं। ()
 (ज) वन पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। ()
 (झ) मानव के हस्तक्षेप से वनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ()